

**अनुपंथी** वि. (तत्.) 1. जो किसी पंथ के अनुसार सम्मत हो, 2. जो (विचार) परंपरागत स्वीकृत हों, शासनुकूल 3. रुढ़िपंथीजैसे- अनुपंथी सिद्धांत।

**अनुपकार** पुं. (तत्.) उपकार का अभाव, अपकार, हानि बिलो. उपकार।

**अनुपकारी** वि. (तत्.) उपकार न करनेवाला, अकृतज्ञ बिलो. उपकारी।

**अनुपक्षी** पुं. (तत्.) विचार आदि की स्थिति में किसी का पक्ष लेने वाला, पक्ष में काम करने वाला, पक्षधर जैसे- पांडवों के अनुपक्षी कृष्ण, बिलो. प्रतिपक्षी।

**अनुपतन** पुं. (तत्.) 1. किसी के पीछे गिर जाना, 2. किसी का स्वास्थ्य, विकास आदि की दृष्टि से क्रमिक पतन या एक के बाद एक पतन अर्थात् अत्यधिक गिरावट जैसे- अंग्रेजों के राज्य में मुगल सल्तनत का अनुपतन होता गया।

**अनुपद** क्रि.वि. (तत्.) कदम-दर-कदम, पीछे-पीछे, अनुसरण करते हुए वि. (तत्.) पीछे, पुं. 1. पदानुसरण 2. गीत में बार-बार दोहराया जानेवाला पद, टेक।

**अनुपद सस्यन** पुं. (तत्.) कृषि. पुष्पन के बाद और खड़ी फसल की कटाई से पहले परवर्ती फसल की बोआई या रोपाई।

**अनुपदिक** वि. (तत्.) [अनुपद+इक] 1. प्रति पद के अनुसार, पदों के क्रम से श्री रामचरितमानस की अनुपदिक व्याख्या, 2. किसी व्यक्ति का या सिद्धांत का अनुगमन करने वाला अनुयायी।

**अनुपदिष्ट** वि. (तत्.) [अन्+उपदिष्ट] जिसे कोई उपदेश न दिया गया हो बिलो. उपदिष्ट।

**अनुपदी** वि. (तत्.) [अनुपद+इन्=ई] 1. पद का अनुगमन करने वाला, 2. प्रत्येक पद का अनुसरण करने वाला, 3. पीछे चलने वाला परानुगामी।

**अनुपनीत** वि. (तत्.) [अन्+उपनीत] 1. जिसे किसी के समीप में न लाया गया हो या जिसे किसी के पास न ले जाया गया हो, 2. जिसका उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत/जनेऊ) न हुआ हो।

**अनुपपत्ति** स्त्री. (तत्.) 1. उपपत्ति अर्थात् प्रमाण या देखने का अभाव 2. असंगत; असिद्ध 3. अप्राप्ति।

**अनुपपन्न** वि. (तत्.) अप्रतिपादित, जो साबित न हुआ हो, जो सही रूप में समर्थित न हो।

**अनुपभुक्त छुट्टी** स्त्री. (तत्.) वह छुट्टी जो उपलब्ध होते हुए भी नहीं ली गई (ताकि सेवानिवृत्ति के साथ उसका लाभ उठाया जा सके)।

**अनुपम** वि. (तत्.) जिसकी उपमा न दी जा सके, अतुलनीय, अनूठा, बेमिसाल, बेजोड़।

**अनुपमता** स्त्री. (तत्.) [अनुपम+ता] 1. किसी का उपमा रहित होना, उपमा रहित 2. किसी के गुण/भाव आदि के उपमा की अन्य किसी में अभाव की स्थिति, सर्वश्रेष्ठता, अनूठापन।

**अनुपमेय** वि. (तत्.) [अन्+उपमेय] 1. गुण आदि की दृष्टि से जिसकी उपमा के योग्य अन्य कोई व्यक्ति या वस्तु न हो, 2. जिसकी उपमा देने के लिए उचित उपमान का अभाव हो 3. जिसकी उपमा=तुलना किसी अन्य से संभव न हो, अनुपमेय प्रयो. तुम्हारा यश प्रसृत दिगंचल अनुपमेय कला।

**अनुपयुक्त** वि. (तत्.) जो उपयुक्त न हो, अयोग्य, अनुचित, बेमेल।

**अनुपयुक्तता** स्त्री. (तत्.) अयोग्यता, अनुचित होना, ठीक न होने की स्थिति, उपयोग में न लाए जा सकने की स्थिति।

**अनुपयोग** पुं. (तत्.) काम में न लाना, उपयोग न करना।

**अनुपयोगिता** स्त्री. (तत्.) उपयोगी न होना, निरर्थक होना।

**अनुपयोगी** वि. (तत्.) जिसका उपयोग न हो सके, बेकार का।

**अनुपर्ण** पुं. (तत्.) (वनस्पति) वह एक छोटी पत्ती जो किसी पत्ते के डंठल से निकलती है।